

ऊसर भूमि में किसानों की आय बढ़ाएगी गेहूं की नई प्रजाति

■ अमिषेक सिंह

कानपुर। ऊसर जमीन (लवणीय व क्षारीय भूमि) पर कम उत्पादन से परेशान किसानों के लिए अच्छी खबर है। कानपुर के वैज्ञानिकों ने गेहूं की नई प्रजाति विकसित की है। यह न सिर्फ ज्यादा उत्पादन देगी बल्कि कीट व रोगों से होने वाले नुकसान से भी सुरक्षित रहेगी। नई प्रजाति का नाम के-2010 रखा गया है।

यह प्रजाति लखनऊ, अलीगढ़, आगरा, प्रयागराज और कानपुर मंडल के किसानों के लिए लाभदायक साबित होगी। किसानों को इसके बीज अगले साल से मिलने शुरू हो जाएंगे।

अधिक तापमान में सुरक्षित रहेंगे दाने

डॉ. विजय यादव ने बताया ऊसर भूमि पर ज्यादा नुकसान अधिक तापमान से होता है। वर्तमान में जितनी प्रजातियां हैं, उनमें अधिक तापमान पर दाने सिकुड़ जाते हैं। जबकि के-2010 के दाने अधिक तापमान में भी सिकुड़ते नहीं हैं, इसके दाने सुडौल रहते हैं।

39 कुंतल से
ज्यादा होगा
प्रति हेक्टेयर उत्पादन

125 दिन में गेहूं
की फसल
हो जाएगी तैयार



इससे करीब 4.5 लाख हेक्टेयर में खेती करने वाले किसानों को सहूलियत होगी।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए)

के वैज्ञानिक किसानों की आय बढ़ाने और खेती में होने वाला नुकसान कम करने के लिए रिसर्च कर रहे हैं। टीम ने बुंदेलखंड क्षेत्र के किसानों को गेहूं की दो बेहतर प्रजाति के-1616 व

9.75 फीसदी हुआ अधिक उत्पादन

डॉ. विजय के मुताबिक के-2010 प्रजाति में चेक प्रजाति से 9.75 फीसदी अधिक उत्पादन मिला है। इस वैरायटी का चेक केआरएल-283 से किया गया था। यह प्रजाति कम समय में 125 दिन में पक कर तैयार हो जाती है।

के-1006 देने के बाद ऊसर भूमि के लिए नई प्रजाति विकसित की। विवि के बीज एवं प्रक्षेत्र निदेशक डॉ. विजय कुमार यादव के मुताबिक करीब आठ साल की रिसर्च के बाद

66 सीएसए के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई गेहूं की नई प्रजाति लवणीय व क्षारीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इसमें अच्छे उत्पादन के साथ कीट व रोग से होने वाले नुकसान से भी किसान सुरक्षित रहेंगे।

- डॉ. आनंद कुमार सिंह, कुलपति
सीएसए विश्वविद्यालय

ऊसर भूमि के लिए गेहूं की यह प्रजाति विकसित की है। के-2010 को केंद्र और यूपी सरकार से मान्यता भी मिल गई है। वैज्ञानिकों की टीम अगले वर्ष के लिए बीज तैयार करेगी।